ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

शेखावाटी भित्ति चित्र और उनका संरक्षण

Shekhawati Murals and their Conservation

Paper Submission: 10/06/2021, Date of Acceptance: 22/06/2021, Date of Publication: 23/06/2021

सुमित मेहता
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

भित्ति चित्र परम्परा को प्राचीन काल से वर्तमान अवस्था तक सुचारू रूप से प्रचलित रखने का श्रेय राजस्थान और उसके क्षेत्र शेखावाटी विशेष को ही है। शेखावाटी क्षेत्र के गढ़, आकर्षक एवं भव्य महल, हवेलियां, छतरियां आदि स्थापत्य के विभिन्न स्वरूपों को यहां के शासकों, सामन्तो व सेठों ने भित्ति चित्रों से सुसज्जित करवाया। इन भित्ति चित्रों के प्रमुख विषय राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि हैं। यहां फेस्को व्यूनी, फेस्को सेको, टेम्परा पद्धति से भित्ति चित्र बनाये गये। यहां के चित्रों की मुख्य विशेषता चटकीले रंग, प्रवाह युक्त रेखांकन, भावकृति आदि हैं। आज मिट्टी, वर्षा का पानी, स्थापत्य का आधुनिकीकरण तथा असावधानियों के कारण ये भित्ति चित्र नष्ट हो रहे हैं। जिन्हें विभिन्न प्रकार के उपाय करके संरक्षित करने की आवश्यकता है।

The credit of keeping the mural painting tradition going smoothly from ancient times to the present stage goes to Rajasthan and its region Shekhawati Vishesh. The strongholds, attractive and grand palaces, havelis, chhatris etc. of the Shekhawati region were decorated with murals by the rulers, feudatories and seths. The main subjects of these murals are political, religious, economic, social and cultural etc. Here fresco paintings were made by Fesco Vuini, Fesco Seco, Tempera method. The main feature of the paintings here are bright colors, flowing drawings, expressions etc. Today these murals are getting destroyed due to soil, rain water, modernization of architecture and carelessness. Which need to be protected by taking various measures.

मुख्य शब्द : शेखावाटी भित्ति, प्रमाणिक विश्लेषण।
Shekhawati Wall, Authentic Analysis.

प्रस्तावना

सभी कलाओं में चित्रकला उत्तम है। चित्रकला की साधना में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। यों तो सम्पूर्ण भारत में प्रागैतिहासिक कालीन, बौद्ध कालीन एवं मध्य कालीन भित्ति चित्रण परम्परा के उन्नत उदाहरण प्राप्त हुए हैं, किन्तु इस परम्परा को वर्तमान अवस्था तक सुचारू रूप से प्रचलित रखने का श्रेय राजस्थान और उसके क्षेत्र शेखावाटी विशेष को ही है[1]।

अध्ययन का उद्देश्य

शेखावाटी क्षेत्र में बने विभिन्न स्थापत्य के भित्ति चित्रों का पता लगाना, उनमें दिए गए विषयों का वर्गीकरण करना, इन भित्ति चित्रों का एतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन करना व प्रमाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करना शोध पत्र का उद्देश्य है। शोध पत्र का एक उद्देश्य शेखावाटी की प्रारम्भिक भित्ति चित्र परम्परा की विशेषता और विभिन्न कालों में उसके विकास का प्रमाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करना भी है। भित्ति चित्रों के निर्माण में यहां के शाषकों और जनसामान्य की भूमिका का पता लगाना है। यहां भित्ति चित्रों की निर्माण की कौन–कौन सी विधियां प्रचलित थी। इनके अतिरिक्त इन भित्ति चित्रों के नष्ट होने के कारणों का पता लगाना और इसको नष्ट होने से बचाने के लिए विभिन्न उपायों का अध्ययन करना शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

विषय विस्तार

शेखावाटी जयपुर राज्य की एक बड़ी और महत्वपूर्ण निजामत थी। यहां के सामन्त जयपुर राज्य और मुगल दरबार से अच्छे सम्बन्धों के कारण वैभवशाली जीवन यापन करते थे। उन्होनें सुदृढ़ गढ़, आकर्षक एवं भव्य महल, मंदिरों एवं छतरियों, कुंए, बावड़ियां आदि का निर्माण करवाया। साथ ही इन्हें सुन्दर चित्रों और अंलकृत आलेखनों से भी सुसज्जित करवाया। इनका अनुसरण

करते हुए छोटे–छोटे सरदारों, ठाकुरों एवं वणिक वर्ग ने भी विशाल हवेलियों मन्दिरों, कुएं, बावडियों, छतरियां आदि का निर्माण करवाया और इन्हें सुन्दर और आकर्षक चित्रों से अलंकृत किया। इसके पीछे शानशौकत का प्रदर्शन, मांगलिक भावना और स्वस्थ्य मनोरंजन का उद्देश्य था[2]।

शेखावाटी में दो प्रकार की पद्धति के भित्ति चित्र मिलते हैं। प्रथम पद्धति फेस्कों व्यूनी कहलाती है। इसमें गीली सतह पर रंग का कार्य किया जाता है जिससे रंग सतह में बैठ जाता है और स्थायी हो जाता है। इसके लिए बांइडिंग मैटेरियल की आवश्यकता नहीं पडती है। इस पद्धति से किये गये चित्र अधिक स्थायी होते हैं। देशी भाषा में इसे आला–गीला पद्धति के चित्र कहते हैं। दूसरी पद्धति फेस्को सेको की है। इसमें सतह के सूख जाने पर गोट आदि बांइडिंग मैटेरियल को काम में लेकर चित्रांकन किया जाता है। ये चित्र थोडे समय पश्चात धूमिल पड जाते हैं। शेखावाटी में टेम्परा पद्धति के चित्र, चटकीले तेल चित्र भी मिलते हैं। यहां के चित्रों की मुख्य विशेषता चटकीले रंग, प्रवाह युक्त रेखांकन, संजीवन, भावकृति तथा रूप एवं वर्ण सांमजस्य है[3]। कला की दृष्टि से शेखावाटी के भित्ति चित्रों में रम्य शारीरिक गठन, रेखाओं में गति और लय, रंगों के नियोजन में एक तीव्रता, तरल सिद्धान्तों का प्रतिपादन मिलता है। यंहा के चित्रों में सौन्दर्य एवं विषय की विविधता होने के कारण ये चित्र काफी ख्याति लिए हुए हैं[4]।

शेखावाटी में भित्ति चित्र बनाने वाले कलाकार को चितैरा कहा जाता है। राजा महाराजाओं, राजकुमारों, वीर नायकों, लोक रीति–रिवाजों, उत्सवों, पर्वों, देवी–देवताओं और मांगलिक संस्कारों के भित्ति चित्र राजनीतिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का परिचय देते हैं।

18वीं 19वीं शताब्दी के चित्रों में समसामयिक विषयों की अभिव्यक्ति में राजनीतिक पक्ष भी महत्वपूर्ण रहा। जिसमें जगदेव पंवार, राव शेखा, शार्दूल सिंह व पंचपाना, डूंग जी, जवार जी एवं अनेक ब्रिटिश अधिकारी आदि के भित्ति चित्र ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बिसाऊ की सेठ गिरधारी लाल सिंगतिया की हवेली, सेठ नाथूराम पोद्दार की हवेली, सेठ बनारसी झुंझूनू वालों की हवेली आदि में वीर जगदेव के विविध पक्ष (दान, शौर्यवीर एवं धर्मनिष्ठा) आदि के चित्र चित्रित हैं। गुढा के शासक जगराम सिंह के पुत्र श्री शार्दूल सिंह[5] को झुंझूनू के बिहारी मंदिर तथा परसरामपुरा में षार्दूल की छतरी में चित्रित किया गया है। इसी छतरी में शार्दूल सिंह के पांचों पुत्रों जोरावर सिंह, किषन सिंह, अख्य सिंह, नवलसिंह तथा केशरी सिंह को चित्रित किया गया है[6] जिन्हें शेखावाटी में पंचपाना के नाम से जानते हैं[7]। सीकर के विक्टोरिया जुबली हॉल[8] में राव शेखा का चित्र चित्रित है। रामगढ़ में रूइया की हवेली और नवलगढ़ में नांगलियों की हवेली, डंगायाचियों की हवेली के बाहरी दीवार पर अश्वारोही एवं बन्दूकधारी के रूप में पाटौदा निवासी डूंगर सिंह व जवाहर सिंह को चित्रित किया गया है। इन्होने सीकर के राव राजा द्वारा अनाधिकृत भूमि पर कब्जा करने के लिए चलाये गये अभियान के विरूद्ध आवाज उठायी थी। जिस कारण शेखावाटी के निवासियों ने इन्हें वीर नायकों के रूप में स्थान दिया[9]।

शेखावाटी के भित्ति चित्रों में लोगो का दैनिक जीवन के विषयों के साथ–साथ अनके व्यक्ति चित्र जैसे सेठ हवेली में, सेठ कार में आदि, उनकी क्रियाशीलता जैसे फूल सूंघते, पंखा झलते, खाना खाते, मूछों पर तांव देते, पगडी बांधते, सज्जा करते, कुर्सी पर बैठे, घोडे पर बैठे आदि के साथ भी चित्रित किया गया है। इन चित्रों से तात्कालीन समय में शेखावाटी समाज के लोगो के रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, आवास तथा व्यवहार आदि की जानकारी प्राप्त होती हैं। शेखावाटी में अखाडा, परम्परा भी महत्वपूर्ण रही है जिसके चित्र परसरामपुरा में शार्दूल सिंह की छतरी में बने हैं।

18वीं 19वीं शताब्दी में प्रचलित आवागमन के साधनों को भी शेखावाटी के भित्ति चित्रों में भरपूर स्थान दिया गया है। जहां 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ऊंट, बैल, घोडा, हाथी आदि के चित्र यहां की स्थापत्य की दीवारों पर चित्रित मिलते हैं। वहीं 19वीं सदी के प्रारम्भ में रथगाडी, बग्गी, इक्कारथ, दुमहतारथ तथा षाहीरथ के चित्र चित्रित मिलते हैं। 20वी शताब्दी के प्रारम्भ में आवागमन के साधनों में आधुनिकीकरण की षुरूआत हुई। अब भित्ति चित्रों में साइकिल, मोटरगाडी, हवाई जहाज, रेलगाडी आदि का चित्रण किया गया जाने लगा[10]। नीम का थाना में महादेव प्रसाद की हवेली, रामगढ़ में रामगोपाल पोद्दार की हवेली में इनके चित्र चित्रित हैं।

शेखावाटी क्षेत्र में जनमानस की धार्मिक आस्था एवं उपासना का प्रबल प्रभाव भी यहां के भित्ति चित्रों में देखा जा सकता है। रावशेखा के पिता मोकल श्री कृष्ण के भक्त थे[11]। तभी से शेखावत वंश में कुलदेवता गोपीनाथ जी की अराधना की जाने लगी। यही कारण है कि शेखावाटी की धार्मिक आस्था का प्रबल केन्द्र वैष्णव धर्म रहा और लाखों की तादाद में वैश्णव धर्म से संबंधित भित्ति चित्र यहां चित्रित करवाये गये जिनमें विष्णु के अवतारिक चित्रों की भरमार है। श्री राम व श्री कृष्ण से संबंधित भित्ति चित्र में विभिन्न विषयों को चित्रित किया गया है। श्री राम से संबंधित विषयों में राम जन्म, वन गमन, पीनाक प्रसंग, स्वर्ण मृग, लक्ष्मण रेखा, लंका दहन, अशोक वाटिका, भरत प्रसंग, राम रावण युद्ध आदि को चित्रित किया गया हैं। रामगढ़ में पोद्दार की छतरी में ये चित्र चित्रित हैं। श्री कृष्ण की लीलाओं से संबंधित चित्रों में महाभारत के अनेक प्रसंग चित्रित किए गये हैं। श्री कृष्ण की बाल लीला किशोर लीला एवं प्रौढ लीला के चित्र विशेष रहे। जिनमें प्रमुख प्रसंग माखन चोर, पूतनावध, नन्दलाल रूप, अनके असुरों का वध, युग्म रूप (राधा–कृष्ण), गोवर्धन धारण, चीरहरण, कालिया दमन आदि हैं। श्री कृष्ण की कुंज एवं विकुंज लीला का महात्म्य भी चित्रित किया गया है। रासलीला के अनेक चित्र रामगढ़ की पोद्दार छतरी, चुरू में टकणैतों की छतरी, फतेहपुर में गोयनका की हवेली, मुकुन्दगढ़ में गजानन्द गनेडीवाल की हवेली आदि में चित्रित हैं। शेखावाटी के भित्ति चित्रों में कबीर पंथ, दादू पंथ, नाथ पंथ तथा गिरि पंथ आदि के अनेक चित्र भी चित्रित हैं। बिसाऊ, रामगढ़, मलसीसर, नीम का थाना आदि स्थानों की भित्तियां इन

चित्रों से मण्डित हैं[12]। उपरोक्त समस्थ विषयों के भित्ति चित्र शेखावाटी की समसामयिक समाज की जीवंतता अभिव्यक्त करते हैं।

नष्ट होने के कारण–

आज शेखावाटी क्षेत्र में इन भित्ति चित्रों का अस्तित्व खतरे में हैं। इनकी समय–समय पर सफाई नही होती है। धूल, मिट्टी आदि इन पर चिपकी रहती है। बरसात का पानी, स्थापत्य पर सीम आदि के कारण से भित्ति चित्र खराब हो रहें हैं। छोटे बच्चे इन्हें नादानी से नष्ट कर रहे हैं। स्थापत्य में बिजली इत्यादि की फिटिंग करने आए व्यक्तियों की असावधानी के कारण ये नश्ट हो रहे हैं। हवेली मालिकों की इन भित्ति चित्रों के रख–रखाव में रूचि कम होती जा रही है। इनके संरक्षण तथा रख–रखाव पर होने वाला अधिक व्यय भी इन भित्ति चित्रों के नष्ट होने का एक प्रमुख कारण है। अतः आज इन भित्ति चित्रों के संरक्षण तथा रख–रखाव हेतु उपाय करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

संरक्षण के उपाय–

स्थापत्य पर बने भित्ति चित्रों को नष्ट होने से बचाने तथा उनकी सजीवता बनाए रखने के लिए उनके संरक्षण, जनता को उनकी उपयोगिता समझाने तथा समय–समय पर उनकी क्षतिपूर्ति एवं रख–रखाव की आवश्यकता है–

हवेली मालिकों को अपनी हवेलियां बेचने से बचना चाहिए। यदि किसी कारण से बेचने की आवश्यकता पडती है तो विक्रय पत्र में यह षर्त अवश्य रखवांए कि क्रेता हवेली में बने भित्ति चित्रों का रख–रखाव करेगा। स्थापत्य पर बने भित्ति चित्रों को समय–समय पर कपडे या ब्रष से साफ करते रहना चाहिए ताकि मिट्टी एवं धूल के कण इन पर से हट जायें। दीवारों पर मकडी के जालों को हटाना चाहिए। स्थापत्य के भवनों में यह ध्यान रखना चाहिए कि पक्षी अपना घौंसला इनमें न बनाये। स्थापत्य की मरम्मत के समय यदि कोई छींटा भित्ति चित्र पर गिरे तो उसे भित्ति चित्रों पर से तुरंत सावधानीपूर्वक साफ कर देना चाहिए। भित्ति चित्रों को वर्षा के पानी से तथा स्थापत्य को सीम से बचाना चाहिए। स्थापत्य पर बिजली फिटिंग तथा अन्य किसी भी प्रकार की फिटिंग करते समय ध्यान रखना चाहिए कि भित्ति चित्र नश्ट या खराब न हो। स्थापत्य के भित्ति चित्रों को छोटे बच्चों से बचाना चाहिए ताकि वे नादानी में इन भित्ति चित्रों को क्षति नहीं पंहुचाए। समय–समय पर कुशल कारीगरों से इन भित्ति चित्रों की क्षतिपूर्ति करवाते रहना चाहिए।

निष्कर्ष–

शेखावाटी के विभिन्न स्थापत्य पर बने भित्ति चित्र अद्वितिय एवं बेजोड़ हैं। इन भित्ति चित्रों में विविध विषयों को चित्रित किया गया है। जिसमें पौराणिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा अनेक साधारण क्रियात्मक विषयों को भी चित्रित किया गया है। इनमें शेखावाटी परिवेश की जीवतंता दिखाई देती है। इन भित्ति चित्रों में न केवल पूर्वजों की परम्परा एवं वंशागत विरासत को जीवित रखने का प्रयास किया गया बल्कि अनेक लोगों की श्रम साधना के कारण उस काल को भी एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में सुरक्षित रखा। यदि इनको संरक्षित नहीं किया तो ये भित्ति चित्र भावी पीढ़ी के लिए मात्र स्मृति शास्त्र के रूप में जाने–पहचाने जाऐंगे। अतः इस ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को बचाने की न केवल सरकार की जिम्मेदारी है अपितु जनता का भी दायित्व है।

सन्दर्भ सूची

1. *डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल – भारतीय चित्रकला वाचस्पति गैरोल, पृष्ठ 13*
2. *श्री आनन्दी लाल पौद्दार – स्मृतिपुष्पी पृष्ठ 280*
3. *रतनलाल मिश्र – शेखावाटी का इतिहास, पृष्ठ 287*
4. *आकृतिः शेखावाटी भित्ति चित्र विशेषांक, पृष्ठ 27*
5. *डॉ. हरफूल सिंह आर्य – शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास, पृष्ठ 26*
6. *डॉ. प्रेमाराम – शेखावाटी के किसान आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ 6*
7. *परसरामपुरा में शार्दूल सिंह की छतरी के मूल लेख के आधार पर*
8. *प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर*
9. *जगदीश सिंह गहलोत – राजपूताने का इतिहास, पृष्ठ 185–90*
10. *फ्रांसिस एवं नाथ – पेन्टेड वाल्स ऑफ शेखावाटी, पृष्ठ 30*
11. *शोध पत्रिका, वर्ष 4, अंक 3, उदयपुर, पौष वि.सं. 2009, पृष्ठ 18–19*
12. *प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर*